बाकी है, कुछ कहने के लिए...

मासूमियता से भरी वो चेहरा
देखने के बाद भी कैसे तू
पैसे होगयी ... ? तेरा काला
आखों का छाया वो बच्ची
की शरीर में हैना ?
कैसे तू पैसे बनी ?
तेरे पाप का चोट जा गयी फिर
भी उसकी मन में है ना वो चोट,
कैसे जाऊगाँ ... ? मुझे जो कहना
था कि अच्छा मनुष्य बनने कि
कोशिश करो तू ।

कब वो दिन आएगा, तो एक बनूगी
स्त्री - पुरुष ... सदीयों से तेरा मन
में हैना जो (सब को) गुलाम बनाने का
मनोभाव ... फैंको, वो मनोभाव
क्योंकि सब की खून की रंग है लाल।
तू ऊँच में है और मैं है नीचे,

फेंको,
वो मनोभाव ईश्वर सब
को बनाने है कुछ मदद करने
केलिए, करो मदद, मन में रखो
मदद करने लोगों को। मुझे जो
कहना था कि हम सब एक है...

क्या हुआ? तुम ऐसे क्यूँ करे?
इतना प्यार करते है तेरी माँ-बाप
फिर भी तू? मुझे जो कहना था
कि आज एक नया शुरूवात है
एक नया प्रभात, एक फैसले
ले लो, अच्छा तू बन जाऊँगी
आज। तेरा सामीप्य चाहता है
वो बूढ़े लोगों ने, उनका आखीरी
दिनों में... याद करो "आज
वो, कल तू...

कैसे मेरे पापा ने करता है
प्यार मेरी माँ से,
कैसे माँ ने उनकी बच्चों
को पालती है, ऐसे प्यार
करना चाहता है तुझे में।
तेरी आखों में दिखता जो
प्यार तूने मेरी आखों
में भी वो दिन दिख है ना?
"दोस्त", ये तीन अक्षर
की सच्ची अर्थ है तू।
आखीरी बार वो दिन तुझे
दिखा वो दिखाना चाहता था,
कहना चाहता था, ये सागर
जैसे गहरा है हमारा रिश्ता।

तेरी बिस्तर के नीचे
रखा है ना नशा ?
फैंको उसको तेरी ज़िंदगी
से, चादर के पीछे से
आओ तू प्रकाश के
सामने, एक नया दुनिया
तुझे इंतज़ार करता है।
कुछ कर अलग, तू कुछ बने
अलग, उड़ो अलग - अलग
दुनियाँ में तेरा शान से।

मुझे जो कहना था कि पहले
समझो, कौन है तू। दर्पन में
दिखने का क्या ज़रूरत है,
सब तेरी अंदर होने के बाद
भी? तालाशी तेरे दिल की
गलीयों में।

कल रात हुआ वो बरसात
देखकर क्यू आ रही है
आखों से पानी,

भूल गयी वो दिन, माँ कि
हाथों में झूला खेलकर
स्कूल जानेवाली वो दिन।
दुख क्या है पता नही,
सदा समय है चेहरा में
खुशी - खुशी . . .

जिंदगी क्या रंग - बिरंगी
वो दिन के पहले
काला हाथों है मेरे शरिर
में। भाग ने केलिए कोई
रास्ता नहीं, मर जाऊँगी
पैसे में, रो रहा हूँ पैसे
में।

कहने के लिए कुछ बाकी
है,
जीने के लिए बाकी है,
पैसे कैसे मर जाऊँगी?
कैसे पैसे बन मनुष्य।

आखिरी बारी कहने के
लिए, कुछ है अधिक,
सबको प्यार करते करते
दुनिया को छोडनी चाहिए।
मुझे मनजूर है,
इश्वर तेरी सबी फैसलो को,
कोई नही है शिकायती . . .

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 641 Participant Code: 106

मुझे जो कहना था कि,
रखवालीयाँ है हमें इस
प्रकृती का, संरक्षण करें,
दुरुपयोग ना करें....
कसम खाती हूँ मैं अगले
जन्म मैं बनो एक अच्छा
मनुष्य....

मुझे जो कहना चाहता है,
लड़कीयाँ से ये [illegible],
दुनिया हमारे भी है,
बच्चों से कहना चाहता
था कि खेलो खुशी से सभी
दिन, क्योंकि वो दिन आगा
आऊँगी, [illegible] तुम एक
होने के लिए चाहता दिन।
नौजवानों से कहना चाहता
था कि मत करो ऐसे....

मुझे जो कहना था कि,
चाहता हूँ अभी भी जीने के लिए.....

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)